संसदीय क्षेत्र कोटा में आयोजित विशाल ऋण वितरण मेले में

माननीय अध्यक्ष का संबोधन

आज हमारे बीच में भारत सरकार की यशस्वी वित्त और कॉर्पोरेट मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण जी पधारी हैं। हम सब उनका स्वागत करते हैं।

भारत के प्रधान मंत्री जी जिन्होंने अपना जीवन गरीबी से जिया, उनकी स्वर्गीय मां ने उन्हें कठिन परिस्थितियों में पाला, लेकिन एक कर्मयोगी की तरह उन्होंने अपने जीवन को समाज और देश के लिए समर्पित किया कि वे गरीब के दर्द को जानते हैं। फुटपाथ में काम करने वाला हो, चाहे वह चाय वाला हो, मोची हो, सब्जी बेचने वाला हो, फूल बेचने वाली हो, नाश्ता बेचने वाला हो, हर गरीब स्ट्रीट वेंडर की उन्होंने चिंता की।

पीएम स्वनिधि के माध्यम से देश का गरीब आत्मनिर्भर हो, दो टाइम की उसकी रोटी का इंतजाम हो, देश के नौजवानों को मुद्रा बैंक योजना में लोन मिले, जिससे वह आत्मनिर्भर खड़ा हो, स्टार्ट अप के माध्यम से, कई योजनाओं के माध्यम से उनको ऋण दिलाकर वे आत्मनिर्भर बनें।

जो महिलायें यहां उपस्थित हैं, ये दूरदराज के गांवों से आई हैं, इन्होंने भारत के नवनिर्माण में नया योगदान दिया है। स्वयं सहायता समूह के माध्यम से उन्होंने दुनिया को बताया है कि गांवों की महिलायें किस तरीके से छोटा-छोटा काम करके, अपने पैरों पर खड़े होकर, भारत के आर्थिक इंजन को तेज चलाने की ताकत हमारी मातायें और बहनें रखती हैं। हमारा किसान, पशुपालक दूरदराज जंगलों में रहकर लोगों को दूध देने का काम करता है। वह सुदूर जंगलों से, गांवों से आया है। आज पशुपालकों की किसी ने चिंता की है

तो भारत के प्रधान मंत्री जी ने की है, वित्त मंत्री जी ने की है। मैं शहर के अंदर स्ट्रीट वेंडर्स से मिलने गया।

मैं चाय बेचने वाले, कचौड़ी बेचने वाले, फूल बेचने वाली, फल बेचने वाले, सब्जी बेचने वाले, मोची का काम करने वाले और छोटे-छोटे गरीब व्यक्तियों के पास गया। मैंने उनसे कहा कि बैंक आपके द्वार पर आई है तो उनको विश्वास नहीं हुआ। मैं बैंक अधिकारियों को धन्यवाद देना चाहता हूं कि बैंक अधिकारी हर ठेले वाले और हर छोटे दुकानदार के पास पहली बार पहुंचे।

आप 10 हजार रुपये से 10 लाख रुपये तक लोन लेकर आत्मनिर्भर हो सकते हैं। आप जब उन ठेले वाले लोगों के पास जाएंगे, छोटे लोगों के पास जाएंगे, जो रोज कमाते हैं और रोज खाते हैं, कई ठेले वाले ठेले के मालिक नहीं हैं, किराये पर ठेला चालते हैं। आज के बाद वे ठेले के मालिक भी होंगे और सब्जी-फ्रूट के मालिक भी होंगे और उनका दो टाइम की रोटी का भी इंतजाम होगा।

बूंदी में एक 20 साल की महिला ने कहा कि मैं अगरबत्ती बनाने का काम करती हूं, मुझे मुद्रा बैंक से लोन मिला, तो दो मशीन और खरीद कर अपने पैरों पर खड़ी हूं। इस तरीके से छोटे-छोटे गरीब व्यक्ति जो फुटपाथ पर बैठ कर काम करता है, जिनका कभी पति बैठता है, कभी घर की महिला बैठती है, कभी बच्चा बैठता है, 24 घंटे लोगों की सेवा करने का काम करते हैं, उनको जब 10-50 हजार रुपये का लोन मिलेगा तो वह अपनी आमदनी को बढ़ा पाएगा, आर्थिक तंत्र को मजबूत कर पाएगा।

इसी तरीके से हमारे युवा मुद्रा लोन के माध्यम से 50 हजार रुपये से लेकर 10 लाख रुपये तक के ऋण का मालिक होगा, लोगों को रोजगार देने का काम करेंगे, यह भारत के प्रधानमंत्री जी और वित्त मंत्री जी का सपना है।

सेल्फ हेल्प गुप की महिलाएं यहां बैठी हैं, आने वाले समय में, बैंकों ने कहा कि हम कोटा से एक मॉडल शुरू करेंगे कि किस तरीके से सेल्फ हेल्प ग्रुप की हर महिला गांव में रहकर 400-500 रुपये खुद कमाएं और अपने सेल्फ हेल्प ग्रुप को मजबूत करें, चाहे फुड प्रोसेसिंग का काम हो, दूध बेचने का काम हो। अभी वित्त मंत्री जी कह रही थीं, ये महिलाएं पशुपालन का काम करती हैं, अगर इनको एपीओ बना दें, छोटे-छोटे ग्रुप बना दें, आने वाले समय में कोटा के अंदर ये महिलाएं दुनिया को बताएंगी कि किस तरीके से हमने रोज दूध बेचकर और सामूहिक कलैक्शन कर के अमूल से भी एक बड़ा प्रोडक्ट खड़ा करने का काम किया है।

कोटा वह शहर है, बूंदी वह जिला है, जहां पर पानी है, घास है, लेकिन मारवाड़ से फिर भी हमारे पशुपालक कम हैं। मेरे मन में हमेशा से पीड़ा थी कि हम किस तरीके से इन पशुपालकों को आत्मनिर्भर बनाएं।

मैं गुजरात गया हूं, मैंने गुजरात में देखा है कि हर घर के अंदर पशुपालक 15 से 25 हजार रुपये कमाने का काम करता है। किसी ने तो अमूल शुरू किया होगा, आज दुनिया के अंदर अमूल के प्रोडक्ट बिकते हैं। वित्त मंत्री जी का सपना है कि आने वाले समय में महिलाएं अमूल के प्रोडक्ट देश में भी बेचेंगी और विश्व के अन्य देशों में भी बेचने का काम करेंगी।

आज यहां बड़ी संख्या में पशुपालक आए हैं। मैं आपसे आग्रह करना चाहता हूं, सरकार ने जो योजनाएं शुरू की है, जिन लोगों का रजिस्ट्रेशन हो चुका है, ठीक है नहीं तो आपके गांव में बैंक आएगी और हर पशुपालक से संपर्क करेगी। पशुपालकों के लिए पशुपालन का शेड, चारा और अन्य तरह की व्यवस्था करने का भी काम करेगी। पशुपालक क्रेडिट कार्ड योजना का सबसे बड़ा लाभ अगर इस देश में कहीं मिला है तो कोटा को मिला है, इससे बड़ा लाभ कहीं मिलने वाला नहीं है।

मुझे कल बैंक के अधिकारी बता रहे थे कि इतना बड़ा आउटरीच क्रेडिट मेला देश में कहीं नहीं लगा है। हमें बूंदी, कोटा और देश के अंदर चाहे वह कोई छोटा स्ट्रीट वेंडर हो, फुटपाथ पर काम करने वाला व्यक्ति हो, नौजवान हो, महिला हो, पशुपालक हो या किसान हो, उन सभी को आत्मनिर्भर बनाना है। जिस दिन भारत का गरीब व्यक्ति आर्थिक तंत्र से मजबूत हो जाएगा और दो टाइम की रोटी का इंतजाम करने लग जाएगा, उस दिन भारत दुनिया में आर्थिक दृष्टि से सबसे आगे होगा। आने वाले समय में दुनिया के अंदर यदि भारत आर्थिक ग्रोथ में सबसे आगे होगा तो वह हमारे गरीब, स्ट्रीट वेंडर, युवा, महिलाएं, पशुपालक और किसान के कारण होगा। हम नया आर्थिक तंत्र खड़ा करना चाहते हैं। देश के सबसे गरीब व्यक्ति को सबसे मजबूत बनाना चाहते हैं। वह गरीब व्यक्ति बैंक से ऋण लेकर मजबूत बनेगा।

ऋण हमारे आर्थिक तंत्र को चलाने में सहायक होता है। मैंने किसानों, मजदूरों और गरीब व्यक्तियों के दर्द को देखा है कि किस तरीके से सब्जी बेचने वाला और फुटपाथ पर काम करने वाला व्यक्ति तीन-चार रुपये सैंकड़े पर ब्याज पर पैसा लेता है। यदि वह दस हजार रुपये का ऋण लेता है तो प्राइवेट व्यक्ति एक हजार रुपये पहले ही रख लेता है। उसको केवल नौ हजार रुपये देता है और चौबीस परसेंट दो रुपये सैंकड़े पर ब्याज लेता है।

चाहे स्ट्रीट वेंडर हो, नौजवान हो, सेल्फ हेल्प ग्रुप की महिलाएं हों, जो घर पर छोटे-छोटे काम करती हैं, कोई ब्यूटी पार्लर का काम करती हैं, कोई फूड प्रोसेसिंग का काम करती हैं, कोई खाना बनाने का काम करती हैं, कोई टिफिन बनाने का करती है, कोई मंगोड़ी बनाने का काम करती हैं, कोई पापड़ बनाने का काम करती है या जो बहुत छोटा-छोटा काम करती हैं, मेरा यही सपना है कि उन महिलाओं को तीन सौ, चार सौ या पाँच सौ रुपये घर बैठकर काम करने पर मिले। उनको कच्चा माल कोई कंपनी दे देगी, उसके बाद

वे फिनिश माल बनाकर दे देंगी। आने वाले समय में हम उसका वैल्यू एडिशन करने का काम भी करेंगे।

मेरा आप सभी से आग्रह है, आज आप यहां पर बड़ी संख्या में आए हैं, आप बड़ी अपेक्षा और आकांक्षा से आए हैं। आप निश्चिंत रहिए। हर व्यक्ति को अर्थिक रूप से मजबूत करना है और उनको ऋण देकर सम्बल प्रदान करना है, ताकि वह अपने काम को, अपने व्यापार को, अपने उद्योग को, अपने व्यवसाय को, चाहे वह घर पर करता हो या कहीं और करता हो, वह खड़ा हो सके। वह उस ऋण को चुकाकर अपना ठीक से जीवनयापन कर सके।

जो लोग यहां पर आए हैं, वे अपना रजिस्ट्रेशन करा लें। अन्यथा, वे अपना नाम, पता और टेलीफोन लिख दें। आने वाले समय में यह अभियान हर गाँव के अंदर चलेगा। बैंक के अधिकारी आपके पास पहुंचेंगे और जिन लोगों के फॉर्म जमा हैं, लेकिन उनको ऋण नहीं मिला है, उन सबको ऋण मिलेगा। यदि कोई कमी होगी तो उसकी पूर्ति होगी। आप निश्चित रूप से मानिए कि सरकार का मत स्पष्ट है कि गरीब से गरीब व्यक्ति को आर्थिक सम्बल देकर भारत के ग्रोथ इंजन को मजबूती से खड़ा करना है।